Cover -I

धर्म भारती–1

रचयिता - श्रमणाचार्य विभवसागर मुनि

चित्र परिचय

प्रिय बालको!

आपने धर्म–भारती शास्त्र पर एक सुन्दर और अनोखा चित्र देखा है। यह चित्र जैनधर्म से महत्त्वपूर्ण संबंध रखता है।

ध्यान से सुनो! जैन सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने रात्रि में सौलह स्वप्न देखे, राजा चन्द्रगुप्त दिगम्बर मुनि जैनाचार्य श्री भद्रबाहू स्वामी के पास जाकर स्वप्नों का फल सुनता है। उन स्वप्नों में से यहाँ पन्द्रहवें स्वप्न का चित्र दर्शाया है – जो इस चित्र में एक स्वर्णरथ को दो छोटे–छोटे गाय के बछड़े खीचे जा रहे हैं। इस स्वप्न का फल निमित्त ज्ञानी आचार्य भद्रबाहू स्वामी ने बताया है कि पंचम काल में संयम का भार युवा पीढ़ी बहन करेगी।

सुना – यह धर्म रूपी रथ हम बालकों के कन्धों पर है, अतः हमें अच्छी तरह धर्मज्ञान पाना चाहिए और सदाचरण करना चाहिए। ताकि हमारा जैनधर्म रूपी रथ सदा – सदा आगे बढ़ता रहे।

।। जैनम् जयतु शासनम्।।

धर्म भारती–1

-: रचयिता :-

श्रमणाचार्य विभवसागर मुनि

-: युगल सम्पादक :-

श्रमण शुद्धात्मसागर मुनि
पं. खेमचंद्र जैन, जबलपुर (म.प्र.)

कृति	:	धर्म भारती–1
शुभाशीष	:	प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज
रचयिता	:	विद्यावाचस्पति महाकवि श्रमणाचार्य विभवसागर मुनि
सम्पादक युगल	:	श्रमण शुद्धात्मसागर मुनि पं. खेमचन्द्र जैन, जबलपुर (म.प्र.)
चित्र रचना	:	अरविन्द आचार्य, इंदौर
प्रकाशक	:	श्रमण श्रुत सेवा संस्थान, जयपुर एवं इंदौर
संस्करण	:	तृतीय – 2022
सचित्र संशोधित	:	प्रथम – 2022
प्रतियाँ	:	1100
प्राप्ति स्थल	:	सौरभ जैन, जयपुर, मो. 9829178749 टी.के. वेद, इन्दौर मो. 9425154777 प्रतिपाल टोंग्या, इन्दौर मो. 9302106984 सन्मति जैन, सागर मो. 9425462997 सुभाष जैन, अशोक नगर, मो. 9425760468
मुद्रक	:	प्रिन्ट 'ओ' लैण्ड, मो. 9829208270

पुण्यार्जक

सिंघई श्री अशोक कुमार जैन, श्रीमती किरण जैन, (बैसा वाले), टीकमगढ़
इंजीनियर आलोक कुमार जैन, श्रीमती अंजलि जैन, अर्हम जैन, आरव जैन, बैंगलोर
डॉ. अंकित जैन, श्रीमती सोनल जैन, कु. सन्निधि जैन, बड़ागांव धसान (टीकमगढ़)

पहली सीख

प्रस्तुत कृति ''धर्म भारती'' का सृजन वह अनूठा उपहार है, जो शिक्षण शिविरों में अबोध बालकों के लिये वात्सल्य विद्या के रूप में दिया गया। उस समय बालक वर्ग ने इसे इतना पसन्द किया कि जो बालक माँ की गोद नहीं छोड़ते थे, वह बालक घर छोड़कर समय के पूर्व उपस्थित हो जाते थे और धर्म शिक्षा को प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण करते। प.पू. गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज का शुभाशीष मिला।

सभी के सहयोग से कृति को सुन्दर रुप सु–सज्जित कर आकर्षक रुप दिया गया, जिन महानुभवों का सहयोग प्राप्त हुआ, वह आभार के पात्र हैं। जिसके फलस्वरूप कृति आपके करकमलों में सुशोभित है।

कृति में आगत त्रुटियों के प्रति सुझाव प्रेषित कर वात्सल्य के पात्र बनें।

– आचार्य विभवसागर

चैत्र शु. त्रयोदशी, (महावीर जयन्ती), सागर

दो शब्द

प्रस्तुत कृति ''धर्म भारती'' आपके जीवन निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान निभाने वाली आधार भूमिका होने से लघु होने पर भी महानतम् सिद्ध होगी, जो आपको दिशाबोध देगी जीवन के निमार्ण एवं निवार्ण की कलाओं का, आप इसे छोटी सी सचित्र कृति समझकर यूँ न रख दें, क्योंकि यह धवल, जयधवल, महाधवल जैसी परमोत्कृष्ट जिनवाणी का अभिन्न अंग है।

बालकों के जीवन निमार्ण की दिशा में पू. गुरुदेव का यह कार्य अत्यन्त श्रेष्ठ है, हम सभी इस कृति का अनुकरण–अनुशरण करते हुए जीवन निमार्ण के पथ पर अग्रसर हों यही कृति का ध्येय है।

श्रमण शुद्धात्म सागर
कार्तिक कृ. अमावस्या
वीर निर्वाण दिवस
घुवारा (म.प्र.)

संपादकीय

पू. आचार्य श्री विभवसागर जी ने प्रस्तुत कृति रचकर गागर में सागर भर दिया है। वर्तमान में जहाँ सूचना टेक्नॉलाजी का सम्बन्ध है। उसमें अद्‌भुत क्रांति हुई है, परन्तु मात्र सूचनाओं से अर्थावबोध एवं आत्मबोध नहीं होता पुस्तकों से गहन विषयों का अध्ययन कर काव्य शैली में पूज्य आचार्य श्री ने लिखकर इसे ज्ञेयता प्रदान की है। अपने अध्यापन काल में मैंने यह अनुभव किया कि ज्ञेय वस्तु बालको को शीघ्र हृदयांगम हो जाती है। अतः मनोवैज्ञानिक रूप से भी इसका अपना महत्त्व है।

पू. आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज स्वयं सरस्वती के वरद पुत्र हैं। उनकी वाणी जहाँ अध्यात्म से ओतप्रोत है वहीं मानव मन की सहज वृत्तियों में प्रवेश कराने की अद्‌भूत क्षमता रखती है।

आचार्य श्री ने मुझे इस कृति के सम्पदान करने का शुभाशीष देकर मेरे ऊपर जो अनुग्रह किया है वह मेरा परम सौभग्य है। पू. आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज के चरणों में नमोऽस्तु ज्ञापित कर जिनेन्द्र प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि यह धार्मिक पुस्तिका पूर्ण प्रभावना से साथ उत्तरोत्तर प्रगति करती रहे।

पं. खेमचन्द्र जैन "पूर्व प्रचार्य"
गढ़ा रोड, जबलपुर

विषय सूची

1.	पाठ-1	गिनती गाओ	1
2.	पाठ-2	अक्षर ज्ञान	6
3.	पाठ-3	व्यञ्जन विज्ञान	20
4.	पाठ-4	णमोकार मंत्र	39
5.	पाठ-5	मंगल	42
6.	पाठ-6	उत्तम	43
7.	पाठ-7	शरण	45
8.	पाठ-8	समाधि भक्ति	46
		जिनवाणी भक्ति	48

गुरु अर्घ

गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज

गुरुवर गणधर देव हमारे, गुरु तीर्थंकर हो।
गुरु आदीश्वर महावीर हो, गुरु क्षेमंकर हो।।
दो अनर्घ्य पद गुरुवर मेरे, शुद्ध चेतना से।
मेरे गुरुवर परम दिगम्बर, धरती पर ऐसे।।

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो
अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सारस्वत कवि 108 श्री विभवसागर जी महाराज

हे धरती के देव दिगम्बर, तुम्हें नमन मेरा।
तेरे पद चिह्नों पर गुरुवर, रहे गमन मेरा।।
भारत की चैतन्य धरोहर, जिनमुद्रा धारी।
महावीर की महा विरासत, प्राणों से प्यारी।।
जिनशासन जयवन्त रहेगा, चारित लख तेरा।
तेरे पद चिह्नों पर गुरुवर, रहे गमन मेरा।।

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विभवसागर मुनिवरेभ्यो
अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पाठ – 1 गिनती गाओ

एक से दस तक गिनती गाओ। जैन धर्म की विनती गाओ।।

बोलो भैया पहले एक
प्रभु चरणों में मस्तक टेक।

बोलो भैया अब तुम दो
जिनवाणी की जय जय हो।

बोलो भैया अब तुम तीन
रत्नत्रय में साधु लीन।

बोलो भैया अब तुम चार
मंगल उत्तम शरण विचार।

बोलो भैया अब तुम पाँच
पापों को न आवे आँच।

बोलो भैया अब तुम छह
श्रावक के कर्तव्य हैं यह।

बोलो भैया अब तुम सात
व्यसन छोड़ दो जल्दी भ्रात।

बोलो भैया अब तुम आठ
मूल गुणों का पढ़लो पाठ।

बोलो भैया अब तुम नौ
नव देवता को सदा नमों।

बोलो भैया अब तुम दस
दस लक्षण है मोक्ष की बस।

पाठ–2

अक्षर ज्ञान

अ–से अक्षर ज्ञान करें।
अरिहंतों का ध्यान करें।

आ

आ–से बनता है आचार।
सादा जीवन उच्च विचार।।

इ–से इन्द्र वही बन जाता।
जय जिनेन्द्र जीवन में लाता।

ई–से ईश्वर वह बन जाये।
मोक्षमार्ग को जो अपनाये।।

उ–से उपाध्याय बन जाते।
मुनिवर पढ़ते और पढ़ाते।।

ऊ–से ऊन क्षेत्र को जाओ।
दर्शन करके पुण्य कमाओ।।

ऋ–से ऋषि मुनि बन जायें। भेष दिगम्बर को पा जायें।।

लृ–से बनता है लृकार। जिनवाणी की जय जयकार।।

ए–से एलाचार्य कहाते।
मोक्षमार्ग में हमें लगाते।।

ऐ–से ऐलक वह बन जाता।
जो श्रावक आचार बढ़ाता।।

ओ–से ओम्कार जय बोल।
जल्दी उठकर आँखे खोल।

औ

औ–से औगुण को तज डालें। जैन धर्म जीवन में पालें।।

अं–से बनते ज्ञान के अंग।
सम्यग्दर्शन होता संग।

अः–से याद जब आता है,
विद्या खूब बढ़ाता है।

अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ऋ,ऌ,ए,ऐ,ओ,औ,अं,अः, यह चौदह अक्षर स्वर है।

तृतीय पाठ

व्यञ्जन विज्ञान

क - से
आठों कर्म
नशायें।

ख - से
खुशियाँ हम
पा जायें।

ग - से
सुन्दर
गीत बनायें।

घ - से
घर-घर
प्रीति जगायें।

ङ - से पंचम स्वर
में गायें।
पाँचों वर्ण
कवर्ग कहायें।।

च - से
चार गति
न जावें।

छ - से

छना हुआ

जल पीवें।

ज - से

जिनवर की

जय बोलें।

झ - से
झूठ कभी
न बोलें।

ञ - से पंच प्रभु
को ध्यायें।
पाँचों वर्ण
चवर्ग कहायें।।

ट - से
टहल करें
गुरुजन में।

ठ - से
ठहरें ध्यान
भवन में।

ड - से
डरें नहीं
संयम से।

ढ - से
ढूंढ़ें धर्म
नियम से।

ण - से णमोकार
को ध्यायें।
पाँचों वर्ण
टवर्ग कहायें।।

त - से
तत्त्व सात
पहिचानें।

थ - से
थावर प्राण
बचायें।

द - से
प्रभु दर्शन
को जायें।

ध - से
धर्म दया
अपनायें।

न - से नमस्कार
मन लायें।
पाँचों वर्ण
तवर्ग कहायें।।

प - से
पंच महाव्रत
लावें।

फ - से
मुक्ति फल
पा जावें।

ब - से
भव के
बंधन तोड़ें।

भ - से
भक्ति में
कर जोड़ें।

म - से महावीर
बन जायें।
पाँचों वर्ण
पवर्ग कहायें।।

य - से
यम व नियम
निभायें।

र - से
रात्रि में
न खायें।

ल - से
लालच, लोभ
न लायें।

व - से
वंदन भाव
जगायें।

श - से
शुभ उपयोग
बनायें।

ष - से
षट् कर्त्तव्य
निभायें।

स - से
सम्यग्दर्शन
पायें।

ह - से

हित-मित
वचन सुनायें।

क्ष - से

क्षमा धर्म
अपनायें।

त्र - से

त्रास नहीं

पहुँचायें।

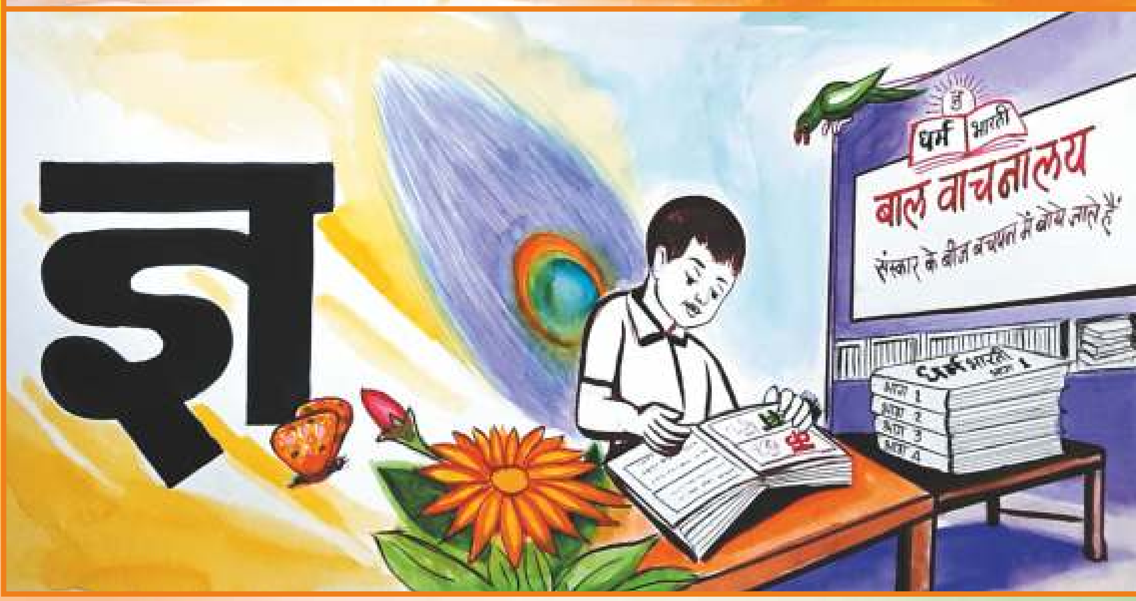

ज्ञ - से

ज्ञानाभ्यास करें।

अपना सदा

विकास करें।।

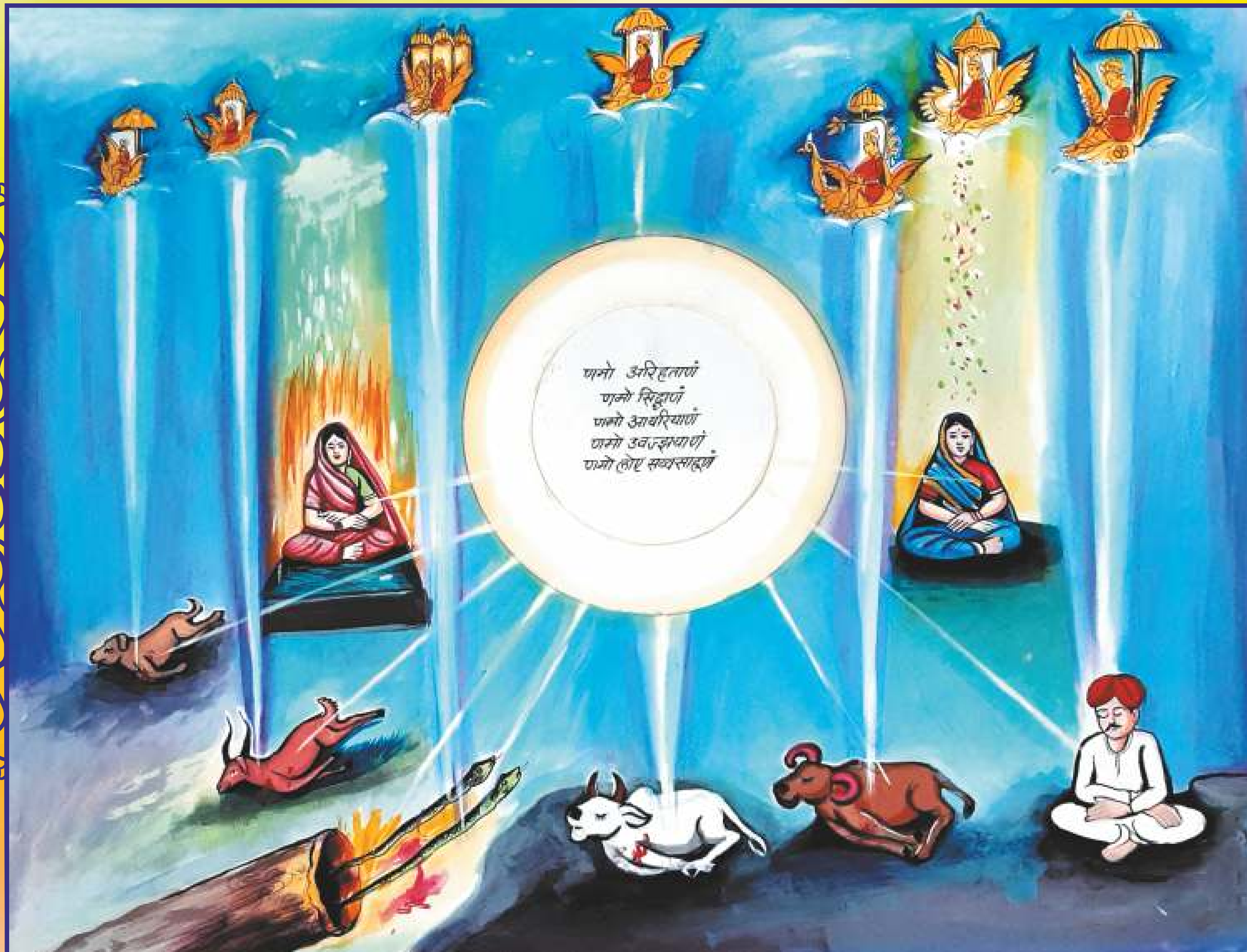
णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

पाठ–4

णमोकार मंत्र

प्रश्न1 मंत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर : परमेष्ठी के प्रति सच्ची श्रद्धा से भरा हुआ मन ही मंत्र कहलाता है।

प्रश्न 2 णमोकार मंत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर : जिस मंत्र में पंच परमेष्ठी को नमस्कार किया गया है, उस मंत्र को णमोकार मंत्र कहते हैं।

प्रश्न 3 णमोकार मंत्र सुनाइये ?

उत्तर : णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।

प्रश्न 4 णमोकार मंत्र का अर्थ कविता में गाकर सुनाइये ?

उत्तर : अरहन्तों को नमस्कार,
सिद्धों को नमस्कार।
आचार्यों को नमस्कार,
उपाध्यायों को नमस्कार।
जग में जितने साधुगण हैं,
उन सबको वन्दन बार–बार।

प्रश्न 5 किसने किसको मंत्र सुनाया। णमोकार का फल प्रकटाया।। कविता सुनाइये ?

उत्तर : जीवन्धर ने मंत्र सुनाया। कुत्ता मरकर स्वर्ग सिधाया।
चारुदत्त ने मंत्र सुनाया। बकरा मरकर देव कहाया।
पार्श्वनाथ ने मंत्र सुनाये। नाग व नागिन देव कहाये।
पद्मरुचि ने मंत्र सुनाया। बैल भी सुनकर देव कहाया।
सीमन्धर ने मंत्र सुनाया। भैंसा मरकर स्वर्ग सिधाया।
देवगुरु ने मंत्र सुनाया। बन्दर मरकर स्वर्ग सिधाया।

प्रश्न 6 णमोकार को किसने ध्याया।

और बताओ क्या फल पाया।। कविता सुनाइयें?

उत्तर : अंजन चोर ने इसको ध्याया, गगन गामिनी विद्या पाया।
अनन्तमति ने इसको ध्याया, तभी देव रक्षा को आया।।
प्रभावती ने इसको ध्याया, देवों ने आ उसे बचाया।
सीताजी ने इसको ध्याया, अग्नि कुण्ड को नीर बनाया।

प्रश्न 7 णमोकार मंत्र की महिमा बतलाओ।

उत्तर : एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

प्रश्न 8 णमोकार मंत्र की महिमा का अर्थ बतलाओ।

उत्तर : णमोकार यह मंत्र कहाता, सारे पाप नशाता है।
सब मंगल में पहला मंगल, इसको माना जाता है।।

अभ्यास प्रश्न

प्र.1 णमोकार मन्त्र किसे कहते हैं ?

प्र.2 णमोकार मन्त्र सुनाइये ?

प्र.3 णमोकार मन्त्र किसने किसको सुनाया एवं सुनकर किसने क्या फल पाया ?

प्र.4 णमोकार मन्त्र की महिमा बतलाओ ?

पाठ–5 मंगल

प्रश्न 1 मंगल किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो पापों को गलाता है,
और पुण्य को लाता है।
सबको सुखी बनाता है,
वह मंगल कहलाता है।।

प्रश्न 2 मंगल कितने होते हैं ? और कौन–कौन से ? (प्राकृत भाषा में बताइए)

उत्तर : चत्तारि मंगलं, अरहंता मंगलं,
सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं,
केवली पण्णत्तो धम्मो मंगलं।।

प्रश्न 3 मंगल पाठ का अर्थ कविता में सुनाइए ?

उत्तर : मंगल कितने होते हैं?
मंगल चार होते हैं।
अरहन्तों का पहला मंगल,
सिद्ध ही मंगल दूजा है।
साधुजन का तीजा मंगल,
धर्म ही मंगल चौथा है।
मंगल पाप नशाता है।
मंगल आनन्द दायक है।

अभ्यास प्रश्न

प्र.1 मंगल कितने होते हैं ?
हिन्दी भाषा में कविता सुनाइये।

प्र.2 मंगल किसे कहते हैं ?

प्र.3 मंगल कितने हैं ? प्रकृत भाषा में सुनाइए ?

प्र.4 मंगल क्या दायक है ?

पाठ–6

उत्तम

प्रश्न 1 उत्तम किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो लोक में सर्वश्रेष्ठ हो, उसे उत्तम कहते है।

प्रश्न 2 उत्तम कितने होते हैं ?
प्राकृत भाषा में सुनाइए।

उत्तर : चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा,
सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा।
केवलि पण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।।

प्रश्न 3 उत्तम कितने होते हैं ?
उन सबके नाम बताओ। (हिन्दी भाषा में)

उत्तर : उत्तम कितने होते हैं ?
उत्तम चार होते हैं।

अरहन्तों का पहला उत्तम,
सिद्ध ही उत्तम दूजा है।
साधुजन का तीजा उत्तम,
धर्म ही उत्तम चौथा है।
सर्वश्रेष्ठ जो होते हैं।
वह उत्तम कहलाते हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्र.1 उत्तम किसे कहते हैं ?

प्र.2 उत्तम कितने होते हैं ?

प्र.3 उत्तम कितने होते हैं ? हिन्दी में कविता सुनाइए।

प्र.4 पहला उत्तम कौन है ?

प्र.5 चौथा उत्तम कौन है ?

पाठ–7 शरण

प्रश्न 1 शरण किसे कहते हैं ?

उत्तर : जिसके आश्रय में जाने से आत्मा की पापों से रक्षा हो उसे शरण कहते हैं।

प्रश्न 2 शरण कितनी होती हैं ? प्राकृत भाषा में सुनाइए ?

उत्तर : चत्तारि सरणं पव्वज्जामि,
अरहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि,
साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।।

प्रश्न 3 शरण पाठ का अर्थ कविता में सुनाइए ?

उत्तर : शरणा कितनी होती है?
शरणा चार होती है।
अरहन्तों की पहली शरणा।
सिद्ध ही शरणा दूजी है।
साधुजन की तीजी शरणा,
धर्म ही शरणा चौथी है।
शरण जीव के रहती है,
भय से रक्षा करती है।

अभ्यास प्रश्न

प्र.1 शरण किसे कहते हैं ?
प्र.2 शरण कितनी होती हैं ?
प्र.3 शरण कितनीं होती हैं ? प्राकृत भाषा में सुनाइए।
प्र.4 शरण किससे रक्षा करती हैं ?
प्र.5 शरण पाठ का अर्थ कविता में सुनाइए।

पाठ–8 समाधि भक्ति

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अन्तिम–मरण–समाधि, तेरे दर पर हो।।

जिनवाणी रसपान करूँ मैं, जिनवर को ध्याऊँ।
आर्यजनों की संगति पाऊँ, व्रत–संयम चाहूँ।।
गुणीजनों के सद्गुण गाऊँ, जिनवर यह वर दो।
मेरा अन्तिम–मरण–समाधि, तेरे दर पर हो।।
तेरी छत्रच्छाया....

परनिन्दा न मुँह से निकले, मधुर वचन बोलूँ।
हृदय तराजू पर हितकारी, सम्भाषण तौलूँ।।
आत्म–तत्त्व की रहे भावना, भाव विमल भर दो।
मेरा अन्तिम–मरण–समाधि, तेरे दर पर हो।।
तेरी छत्रच्छाया....

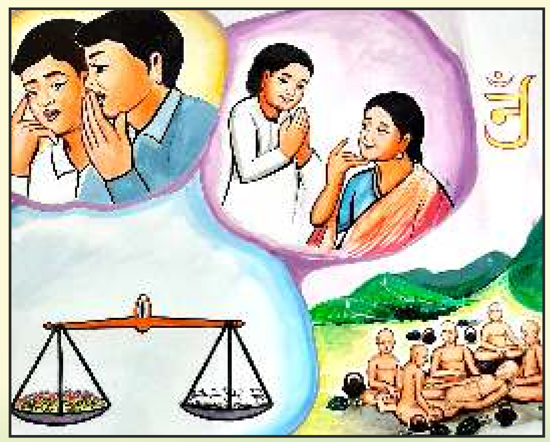

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अन्तिम–मरण–समाधि, तेरे दर पर हो।।

बाल्यकाल से अब तक मैंने, जो सेवा की हो।
देना चाहो प्रभो! आप तो, बस इतना फल दो।।
श्वास–श्वास, अन्तिम श्वासों में, णमोकार भर दो।
मेरा अन्तिम–मरण–समाधि, तेरे दर पर हो।।
तेरी छत्रच्छाया....

विषय कषायों को मैं त्यागूँ, तजूँ परिग्रह को।
मोक्षमार्ग पर बढ़ता जाऊँ, नाथ अनुग्रह हो।।
तन पिंजर से मुझे निकालो, सिद्धालय घर दो।
मेरा अन्तिम–मरण–समाधि, तेरे दर पर हो।।
तेरी छत्रच्छाया....

जिनवाणी भक्ति

श्वास–श्वास में तुझे बसायें, हे जिनवाणी माँ!
बार–बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।

ग्वाला को भी कुन्दकुन्द सा, संत बनाती माँ।
ग्रन्थ सिखा निर्ग्रन्थ बना, अरिहन्त बनाती माँ।।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, मोक्ष दायिनी माँ।
बार–बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।
श्वास...... ।।

धर्म सभा में आने वाले, समवसरण जाते।
धर्म देशना सुनने वाले, दिव्यध्वनि पाते।।
गुरु मिले तो प्रभु मिलेंगे, कहती वाणी माँ।
बार–बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।
श्वास श्वास में ..... ।।

रजत रत्नत्रय महोत्सव 2022-2023

सारस्वत कवि श्रमणाचार्य डॉ. विभवसागर मुनिराज

पूर्व नाम	-	पं. अशोक कुमार जी जैन ''शास्त्री''
जन्म स्थान	-	किशनपुरा (सागर)
जन्मतिथि	-	कार्तिक कृष्ण अमावस्या 2033, तद्नुकूल 23 अक्टूबर, 1976
पिताश्री	-	श्रावक रत्न श्री लखमीचन्द्र जी जैन (क्षुल्लक सिद्धसागर जी)
माताश्री	-	श्राविका-रत्न श्रीमती गुलाबबाई जैन (समाधिस्थ आर्यिका प्राज्ञाश्री माताजी)
शिक्षा	-	इण्टर संस्कृत शास्त्री प्रथम वर्ष
धार्मिक शिक्षा	-	धर्मशास्त्री द्वितीय वर्ष
शिक्षण संस्थान	-	श्री गणेशप्रसाद वर्णी दि. जैन महाविद्यालय, मोराजी, सागर (म.प्र.)
वैराग्य	-	9 अक्टूबर, 1994 को ब्रह्मचर्य व्रत लिया
क्षुल्लक दीक्षा	-	28 जनवरी, 1995 मंगलगिरी, सागर (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा	-	23 फरवरी, 1996, देवेन्द्र नगर जिला-पन्ना (म.प्र.)
मुनि दीक्षा	-	14 दिसम्बर, 1998, अतिशय क्षेत्र वरासौ, भिण्ड (म.प्र.)
दीक्षा गुरु	-	गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज
आचार्य पद	-	31 मार्च, 2007, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
विशेष	-	जैन आगमरूपी मानसरोवर के राजहंस की तरह झलक देने वाले प्रज्ञा श्रमण की प्रवचन शैली जन-जन के लिए हृदयग्राह्य है।
रुचि	-	पठन-पाठन, काव्य, सृजन, चिंतन, मनन
कृतियाँ	-	अभी तक आचार्य श्री द्वारा 85 कृतियों की सर्जना की गई है
अलंकरण	-	''सारस्वत-श्रमण'', ''सारस्वत कवि'', ''शास्त्र कवि'' ''नय चक्रवर्ती'', ''संस्कृताचार्य'', विद्यावाचस्पति (डॉक्टर)'', चर्यानिधि, श्रुत प्रभाकर, महाकवि, काव्य केशरी, सम्यक्त्व चूड़ामणि

प्रिन्ट 'ओ' लैण्ड, 9829205270

प्रार्थना

प्रार्थना के छन्द पावन, हे प्रभो! सुन लीजिए!
साधना के दिव्य पथ में, ध्यान हम पर दीजिए।।
हम लघु बालक तुम्हारे, तुम हमारे देवता।
ज्ञान मंदिर में पधारे, अर्घ लेकर नम्रता।।
मंत्र अनुशासन सिखा गुरु, कृपा हम पर कीजिए।
साधना के दिव्य पथ में, ध्यान हम पर दीजिए।।
प्रार्थना....

शिक्षा बने सर्वोषधि, यह स्वस्थ भारत देश हो।
विश्व के कल्याण हेतु, आपका संदेश हो।।
एक भारत पूर्ण भारत, एकता रस पीजिए।
साधना के दिव्य पथ में, ध्यान हम पर कीजिए।।
प्रार्थना.....

काश्मीर से कन्या कुमारी, एक भारत वर्ष हो।
राष्ट्रहित तन–मन समर्पित, राष्ट्रहित आदर्श हो।।
जीना सफल होगा हमारा, राष्ट्रहित में जो जिये।
साधना के दिव्य पथ में, ध्यान हम पर दीजिए।।
प्रार्थना....